हिन्दी का पुर्नस्थापन

दक्षिण भारत की चार भाषाओं के अतिरिक्त भारत की सभी भाषाओं का उद्‌गम संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश वंशावली से हुआ। इस भाषा समूह की तरह हिन्दी का इतिहास लगभग 1300 वर्ष पुराना है। परिव्राजकों तथा संतों की भाषा होने के कारण हिन्दी अखिल भारतीय भाषा बनी, जन भाषा बनी। अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक प्रचलित हुई।

हिन्दी को भारत की स्वभाषा बनाने की स्वीकृति में बंगाल, गुजरात, तथा महाराष्ट्र के मनीषियों का विशेष योगदान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में जब स्वदेशी का उद्‌घोष हुआ, तो स्वामी दयानन्द सरस्वती, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मा गान्धी जैसी विभूतियों के महनीय योगदान से हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में देखा जाने लगा। जैसे-जैसे स्वतंत्रता आन्दोलन गतिशील हुआ, अंग्रेज़ी सत्ता को हटाने के साथ ही अंग्रेज़ी भाषा को हटाने की बात भी ज़ोर पकड़ने लगी।

तत्कालीन भारत में प्रशासन तथा उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी बन चुकी थी। राष्ट्रीय भावना को बलवती बनाने के लिए विद्यापीठों की स्थापना की बात चली। जब *प्रथम विद्यापीठ*, गुजरात विद्यापीठ, की स्थापना हुई, तो गान्धी जी का सुझाव था, कि वहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो। हिन्दी को विज्ञान की भाषा बनाने की दृष्टि से नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा विज्ञान-कोश की रचना की गई, परन्तु विश्वविद्यालयों में उसका प्रयोग नहीं किया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सभी विषयों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाने की बात तो चली, परन्तु उसे नहीं अपनाया गया। जैसा बार-बार बताया गया है, जन-भाषा माध्यम बिना, जन साधारण ज्ञान-विज्ञान से वंचित होता चला आ रहा है।

गान्धी जी स्वभाषा को उतना ही महत्व देते थे, जितना राजनैतिक स्वतंत्रता को। उन्होंने 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में कहा, *यह भाषा का विषय बड़ा भारी और महत्वपूर्ण है। यदि सब नेता सब काम छोड़कर इसी में लगे रहें तो ठीक है।* महात्मा गान्धी हिन्दी के प्रबलतम समर्थक थे, उन्होंने लिखा, *अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज ही विदेशी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा को बन्द कर दूं। सारे शिक्षकों और प्रोफ़ेसरों से यह माध्यम तुरन्त बंद करा दूं, या उन्हें बर्खास्त करा दूं। मैं पाठ्य पुस्तकों की तैयारी का इन्तज़ार नहीं करूंगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे अपने-आप चली आएंगी। यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरन्त इलाज होना चाहिए।*

भारत स्वतंत्र हुआ, नया संविधान बना, उसमें सर्व सम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया। हिन्दी, अलगाववादी राजनीति का शिकार हुई, हिंसात्मक हड़तालें हुई, लोगों ने आत्मदाह किया, ऐसे वातावरण में हिन्दी पर प्रतिबंध लगा दिया गया, कि यदि एक भी प्रदेश ने इसका विरोध किया तो उसे राजभाषा नहीं बनाया जायगा।

हमें हताश होकर नहीं बैठना है, हमें अपनी भूलों से सीखना है। प्रगति का मार्ग सरल रेखा में नहीं होता है, उसमें भूल-भुलैयां तथा उतार-चढ़ाव आते हैं। हमें रचनात्मक कार्यो द्वारा हिन्दी को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी भाषा बनाना है। खेद का विषय है कि सरकारों का ध्यान इस तरफ़ नहीं है। अतः प्रबुद्ध तथा संवेदनशील नागरिकों द्वारा यह काम प्रारम्भ करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि यदि हमने छोटे स्तर पर भी इसे सफल कर के दिखा दिया तो, सरकारी सहायता भी उपलब्ध होगी। इस संदर्भ में दो कामों के उदाहरण नीचे दिए जाते हैं। *पहला उदाहरण है, भारत की संस्था तामिल नादु साइन्स फ़ोरम का, दूसरा अमेरिका के प्रवासी भारतीयों की संस्था इन्डीकोर का।*

तामिल नादु साइन्स फ़ोरम संस्था का उद्देश्य विज्ञान को लोकप्रिय बनाना था। सन् 1980 में मद्रास विश्वविद्यालय के कुछ शोध छात्रों द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। फ़ोरम का काम था, अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन। *सन् 1987 में फ़ोरम के उद्देश्यो, कामों तथा कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण मोड़ आया जब ग्रामीण बच्चों के लिए तमिल भाषा में एक वैज्ञानिक पत्रिका, थुलिर, का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।* थुलिर का मूल्य 5 रुपये था, स्कूलों के अतिरिक्त विद्यार्थी भी चंदा करके उसे ख़रीदते थे, इस प्रकार उसकी 10,000 प्रतियां बिक जाती थी। फ़ोरम ने ग्रामीण बच्चों के लिए विज्ञान शिविर आयोजित किये, इनमें स्कूल के विज्ञान शिक्षकों के अलावा, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तथा विद्यार्थी भी भाग लेते थे। सन् 1991 में फ़ोरम ने समाज के वंचित वर्ग के लिए साक्षरता अभियान, तथा रात्रि-पाठशालाओं की व्यवस्था की, सहकारी बचत संस्थाएं बनाई। सदस्यों प्रति सप्ताह पांच रुपये जमा करक, ज़रूरतमंद सदस्यों को कम ब्याज पर उधार दिया गया। संतोष की बात है कि सभी उधार चुकता कर दिया जाता है।

आगामी वर्षो में फोरम ने 100 से अधिक विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित कीं, अनेक विडियो बनाए, तथा बालकों के लिए विज्ञान मेले आयोजित किए। मेलों में विज्ञान के प्रयोग, प्रकृति निरीक्षण, गणित की पहेलियां, प्रतियोगिताएं, वैज्ञानिक प्रदर्शन तथा मनोरंजक नाटक इत्यादि शामिल होते हैं। फ़ोरम द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर बाल विज्ञान-कांग्रेस